DIGITAL EDITION
ISSUE NO.36

लोटपोट

हँसी और मस्ती की पाठशाला

51 YEARS ANNIVERSARY

मोटू पतलू और अनोखा दशहरा

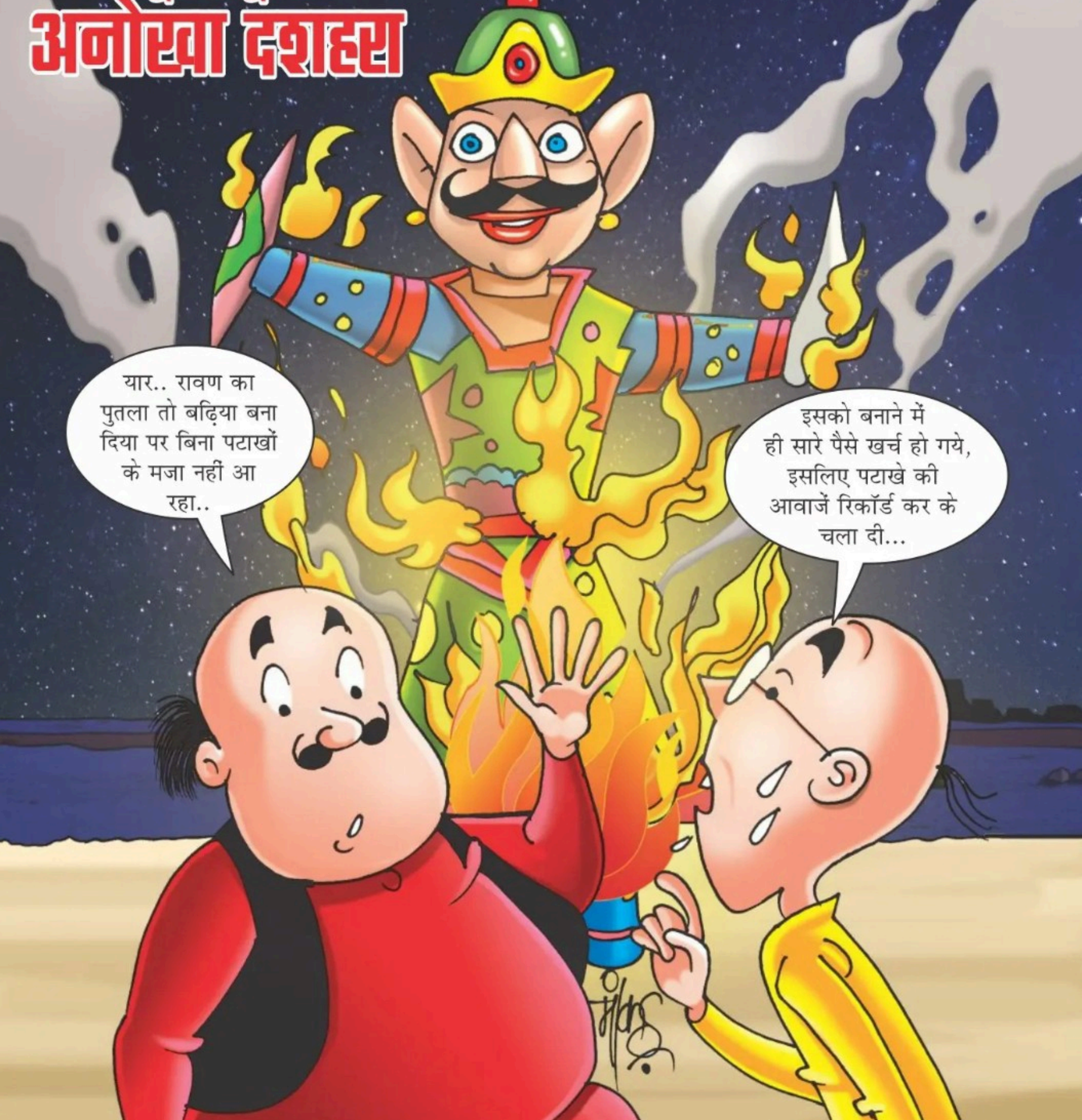

VISIT…

लोटपोट

Visit:
www lotpot com

DIGITAL EDITION
ISSUE NO. 36

Founder
Lt. Sh. A.P. Bajaj

Chief Editor
P. K. Bajaj

Editor
Aman Bajaj

Joint-Editors
Anushka
Amisha

Editorial Department

Concept illusatration direction
Harvinder Mankkar

Editorial Address:
LOTPOT FORTNIGHTLY
A-5, Mayapuri, Phase-I,
New Delhi-110064.
Ph.: 28116120, 28117636
Fax .: 91-11-41833139
Email: edit@mayapurigroup.com
Web.: www.mayapurigroup.com

Printed at ARORBANS PRESS,
Shree S. L. Prakashan
A-5, Mayapuri, Phase-I, N.D.110064.

Owner, Publisher, Printer
Parmod Kumar Bajaj

Printing Place:
A-5, Mayapuri, Phase-I, New Delhi-110064.

For Advertising: Shekhar Chopra
E-mail: shekhar@mayapurigroup.com

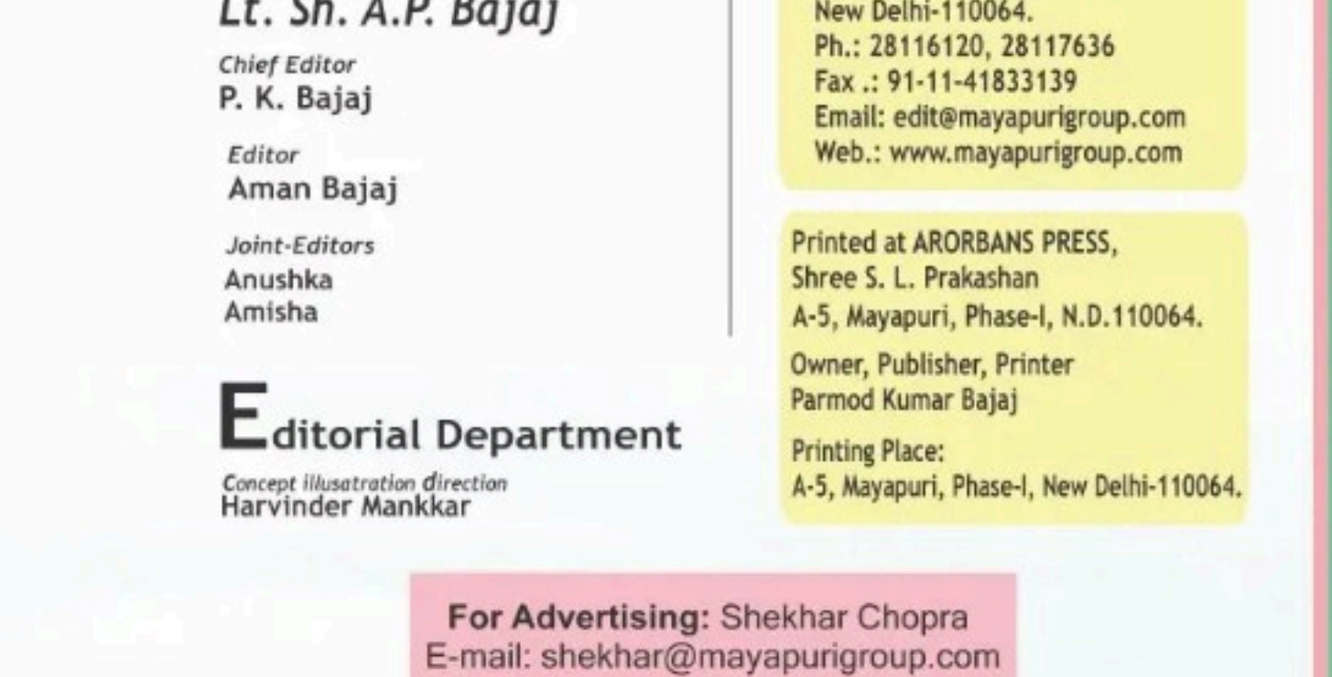

only books magazine

संपादकीय

निःस्वार्थ होकर दयालु बने

यूं तो जीने को जिंदगी कहा जाता है। लेकिन आज कुछ जिंदगियां हमारे आस-पास ऐसी नजर आती है जो शायद जीना भूल गई है। हम अपने आस पास बहुत से ऐसे जरूरत मंद और असहाय लोगों को देखते है जो जैसे-तैसे अपनी जिंदगी गुजर-बसर कर रहे है। कहने को तो ऐसी हजारों-लाखों जिंदगियां है लेकिन उन हजारों-लाखों में उन बच्चों का क्या जिनका सूरज उगने से पहले ही डूब गया हो। अगर अपने आस-पास नजर दौड़ातें है तो देखते है कि कोई मासूम बच्चा अखबार बेच रहा है तो वहीं कोई सड़क किनारे बड़े साहब का जूता चमका रहा है। या फिर भीख मांग रहा हैं। या फिर आपकी आखों के सामने से जो चमचमाती कार निकली हो वो भी किसी बच्चे के हाथ की मेहनत से ही चम-चमा रही हो।

खैर कहने को तो इन बच्चों की जिम्मेदारी कुछ समाजसेवा संगठनों ने उठा रखी है लेकिन बावजूद इसके कोई बदलाव देखने के नहीं मिल रहा और स्थिति जस की तस बनी हुई है। क्योंकि आज सहायता के भाव में भी स्वार्थ आडे खड़ा हुआ है। इस स्वार्थ ने इन्सान की आत्मा को एक पिंजरे में कैद करके रख दिया है। वो आज के बदलते परिवेश और चकाचौंध में इतना बदल चुका है कि किसी की सहायता से पहले अपना स्वार्थ सोचता है। अब ऐसे में इन बच्चों को इनके हाल पर नहीं छोड़ा जा सकता क्योंकि हम सभी सामाजिक प्राणी है और कुछ कर्तव्य हमारा भी बनता है इन बच्चों के प्रति तो क्यों न एक पहल की जाए नि:स्वार्थ होकर जरूरत मंदों की मदद की जाए। क्या पता आपकी छोटी सी मदद किसी बच्चे के चहरे पर मुस्कान ले आए।

तो वादा कीजिए आज के बाद ऐसे किसी बच्चे को देखें तो बजाय देने या दया दिखाने के उसकी शिक्षा का खर्चा उठायें या उसे किसी भी ऐसी सहायता से भरपूर करें जो उसे जीवन में किसी बेहतर मंजिल तक पहुंचा सके।

(ऐसे ही नि:स्वार्थ लोगों में मदर टेरेसा और एपीजे अब्दुल कलाम, और कैलाश सत्यार्थी जैसे नाम शामिल है। जिन्होने नि:स्वार्थ भाव से लोगो की सहायता की।)

LOTPOT title is registered with the R.N.I.,Govt. of India. All rights are reserved with publisher for every content published in Lotpot. Nothing should be reproduced in any form without the permission of publisher. All contents published in the Lotpot are work of fiction and any resemblence to people,place etc is purely incidental. Illustrations are based on the imagination of artist and editor and /or pubisher are not responsible for it. Editor and publisher may not be in agreement with the opinion of writers over the published contents. If any body has any objection towards any published content, they are welcome to submit the same with the publisher and it will be published as well. All disputes will be subject to the jurisdiction of Delhi only.Rs 4/- surcharge extra for Nepal, Srilanka, Dubai and other Gulf countries.

नटखट नीटू

○ हरविन्द्र मांकड

©COPYRIGHT

यह नई गेम मैनें डाउनलोड की है.. 'शेतानी स्माइली'.. ऑन कर के देखता हूं कैसी है?

हा हा हा

हा हा हा

अरे.. यह स्माइली तो मेरे आई पैड से निकल कर बाहर आ रहे है..

only books magazine

हा हा हा

बाप रे.. यह तो मेरे पीछे ही पड़ गए..

इतना स्माइल क्यों कर रहा है डोगो..

यार.. भूख लग रही है पर कुछ नया खाने का मन हो रहा है..

हा हा हा.. मशीनी कुत्ता और जीभ के स्वाद.. अरे..तू क्या चाट-पकोड़े खायेगा.. हा हा हा

रोबो.. एक्शन टाइम आ गया.. इन शैतानी स्माइली को खा जाओ..

पर मुझे भूख नहीं है ना.. नीटू

अरे.. ये मुझे तंग कर रहे है..

तो फिर मैं जरूर इन्हें खाकर चटकर जांऊगा..

डोगो ने अपना मुंह बड़ा किया और वैक्यूम क्लीनर बना दिया।

फिर तो अपनी सुपर पॉवर से उसने हवा का ऐसा दबाव बनाया कि सारे स्माइली उस वैक्यूम क्लीनर में खिचतें चले गये..

अरे वाह डोगो.. क्या चटपटा खाना खाया है तुमने

सारे स्माइली डोगो के पेट का भोजन बन चुके थे।

डकार!! यम यम.. पहली बार खाये है पर इटस वेरी टेस्टी

शाबाश.. डोगो.. प्राउड आफ यू.. सही समय पर सही एक्शन लिया।

थैक्यू नीटू

हा हा हा.. टीटा.. काश तू पहले आता तो वो गेम लाइव देख लेता।

नीटू.. मेरे मोबाइल में नई गेम डाल दो 'शैतानी स्माइली' सुना है बहुत इंटरस्टिंग गेम होगी।

बचपन की बातें

अनुजा साठे की जुबानी

-सिद्धार्थ अरोड़ा 'सहर'

अनुजा जब सेकंड स्टैण्डर्ड में छुटकी सी थल तब एक बार उनको स्कूल से छुट्टी लेनी पड़ी, लेकिन अनुजा के स्कूल में एक रूल था कि कोई भी बच्चा जो छुट्टी ले रहा है, उसे नेक्स्ट डे अपने पेरेंट्स में से किसी एक से एक नोट लिखवाकर लाना होता था जिसमें ये रीज़न लिखा होना चाहिए था कि आपने बीते कल में छुट्टी क्यों की थी?

छोटी अनुजा के लिए भी यही रूल था. लेकिन अनुजा के पेरेंट्स वॉर्किंग थे इसलिए वह दोनों सुबह-सुबह ऑफिस चले जाते थे.

अब छोटी सी अनुजा ने सोचा कि मै क्या करूँ? उनकी क्लास टीचर तो पापा का लिखा लैटर मांगेगी?

तब छोटी अनुजा ने अपना दिमाग लगाया और अपनी हैंडराइटिंग में ही पापा की तरफ से हिन्दी में एक लैटर लिखा और जाकर अपनी टीचर को दे दिया. उनकी हैंडराइटिंग और नीचे अनुजा के पापा का नाम भी लिखा था और सिग्नेचर भी किया हुआ था. ये देख छोटी अनुजा की क्लास टीचर ज़ोर ज़ोर से हँसने लगी.

उन्होंने छोटी अनुजा से कहा कि अबसे तुम अपने पापा का लैटर मत लाना, पापा को ही लेकर आना. जब उनके पापा को पता चला तो वो भी बहुत हँसे पर छोटी अनुजा को ये भी समझा दिया कि आगे से कभी ऐसा नहीं करना है.

छोटी अनुजा को राइटिंग का इतना शौक था कि 4जी स्टैण्डर्ड में एक बार वो स्कूल जाने से पहले एक लैटर लिखकर चली गयी कि वो घर छोड़कर जा रही हैं, उन्हें ढूँढने की कोशिश न की जाए.

अब उनके पापा जब घर आए और छोटी अनुजा को वहाँ न पाकर चौंक गये, स्कूल टाइमिंग के हिसाब से अनुजा को आधे घंटे पहले ही आ जाना चाहिए था. पर जब वह नहल आईं तो सब जगह ढूँढने की बात होने लगी, लेकिन कुछ देर में खेलती फुदकती छोटी अनुजा जब घर आईं तो सबने बहुत डांटा और पूछा कि तुम कहाँ चली गयी थीं?

छोटी अनुजा ने मासूमियत से जवाब दिया ''मैं तो अपनी सहेलियों के साथ खेल रही थी'',

''अगर खेल रही थी तो फिर ये लैटर क्यों लिख के गयी?''

''ओह वो, वो तो मैंने यूँ ही एक फिल्म में देखा था तो लिख दिया''

छोटी अनुजा को अपने मम्मी पापा को तंग करने के जुर्म में फिर डांट पड़ी. -

बचपन की बातें

गौतम गुलाटी की जुबानी

–सिद्धार्थ अरोड़ा 'सहर'

ये हमारा एक नया सेगमेंट है 'बचपन की बातें', इसमें हम आपसे लोटपोट मैगज़ीन और कॉमिक के लिए कुछ सवाल पूछेंगे, जिन्हें एक कहानी की तरह बताना है।

अपनी बचपन की कोई शरारत बताइए जिसकी वजह से आपके टीचर्स परेशान हुए हों?

एक्चुअली सिद्धार्थ मैं बचपन में बहुत सीधा बहुत सिम्पल था, सो मैं ज़्यादा शरारत नहीं करता था। पेरेंट्स से झूठ बोलना या टीचर को तंग करना, इम्पॉसिबल था। (कुछ रूकते हुए) हाँ, एक बार की बात है, मैं एक न्यू स्कूल में एडमिट हुआ था, तो वहाँ एक क्लास फेलो मुझे मिला और बोला कि ये नया स्कूल है, तुम नये हो जहाँ, मैंने कहा यस, तो वो बोला कि चलो तुम्हें मेरे साथ स्कूल बंक करना है। मैं कुछ समझ नहीं पाया पर मैंने हामी भर दी। अब वो मुझे स्कूल से छुपते छुपाते ले जाने लगा, पर रास्ते में हमें हमारा फिजिकल ट्रेनर मिल गया। अब वो मुझे एक जगह छुपा के बोला, कुछ देर यहीं वेट कर, अभी वो चला जायेगा फिर हम चलेंगे। पर हुआ इसका उलटा, सिद्धार्थ क्या बताऊं तुम्हें, वो कोई साढ़े छः फिट के सरदार जी थे, उन्होंने मुझे देख लिया। बाहर बुलाया और एक ही थप्पड़ ऐसा मारा कि मैं (हँसते हुए) पूरा हिल गया और मैंने कसम खा ली कि आज के बाद कभी बंक करने का ख़याल भी मन में नहीं लाना है। ईवन किसी फ्रेंड या क्लासमेट की सुननी ही नहीं है।

बचपन की बातें

मनन भारद्वाज की जुबानी

-सिद्धार्थ अरोड़ा 'सहर'

फिल्म शिद्दत के संगीतकार मनन भारद्वाज बचपन में बहुत-बहुत शरारती हुआ करते थे। वो इतने शरारती थे कि उनकी मम्मा को लगता था कहीं मेरा बेटा पूरे शहर का सबसे शरारती बच्चा तो नहीं है।

उनकी मम्मा जिस स्कूल में टीचर थी उसी में मनन भी पढ़ते थे। एक बार मनन ने बहाना किया कि उनकी तबियत ठीक नहीं है, वो आज स्कूल नहीं जायेंगे। उनकी माँ जल्दी में थीं सो उन्होंने आराम करने की सलाह दी और स्कूल चली गयी। लेकिन जब क्लास में पहुँची तो पता चला मनन के सारे दोस्त किसी न किसी बहाने से छुट्टी पर हैं। उन्हें लगा ज़रूर ये सब बच्चे बहाना बनाकर कहीं घूमने गये होंगे लेकिन मज़े की बात तो ये थी कि टीचर मम्मा के घर पर ही सारे बच्चे इकट्ठे होकर मस्ती कर रहे थे। ये हिस्ट्री में शायद फर्स्ट टाइम हुआ था कि जिस टीचर से सारे बच्चे डरते हैं, जिस टीचर से झूठ बोलकर छुट्टी ली है, बच्चे उन्हीं के घर पर बैठे स्कूल बंक मार रहे हैं और पार्टी कर रहे हैं।

मनन की शरारतों से उनकी मम्मा बहुत परेशान थीं। 10वीं स्टैण्डर्ड की पढ़ाई तो जैसे तैसे मयंक एंड टीम ने पूरी कर ली और पास हो गये। लेकिन स्कूल बंक करने की ऐसी आदत लगी थी और पढ़ने में किसी का मन होता ही नहीं था कि 11वीं में उनका फेल होना पक्का था। लेकिन मनन के दिमाग में एक आइडिया आया। उन्होंने एक फिल्म देखी थी 'खिलाड़ी', उसमें हीरो लाइब्रेरी में रात को घुसकर कुछ गड़बड़ करता है। मनन को भी यहाँ से आइडिया सूझा और उन सारे दोस्तों ने जैसे-तैसे करके चपरासी के लड़के को पटाया। फिर स्कूल में आधी रात के बाद घुसे, स्टाफ रूम की चाबियों का जुगाड़ किया, पर एक डर भी था कि कहीं कोई बाहर से न देख ले और चोर समझ के हल्ला न मचा दे। उन्होंने चुपचाप 11वीं के क्वेश्चन पेपर्स कॉपी किए और डरते-डरते घर आ गये। फिर जल्दी-जल्दी उन्होंने तैयारी की और राम का नाम लेकर एग्ज़ाम देने पहुँच गए।

उस साल का जब रिजल्ट आया तो मनन और उनके सारे दोस्त बहुत डरे हुए थे लेकिन पासिंग मार्क्स देखकर उन्हें तसल्ली हुई। लेकिन मनन को यूँ चोरी छुपे पेपर्स निकालना बिल्कुल अच्छा नहीं लगा। उन्हें नींद आनी बंद हो गयी। जब वो बहुत परेशान हो गये तब उन्होंने ये बात खुद से सबको बता दी और खूब सारी डांट खाने के बाद दोबारा ऐसा न करने की कसम खाई। पर आज मनन उस रात का थ्रिल याद करते हैं तो उनकी आँखों में फिर वही शरारती चमक आ जाती है।

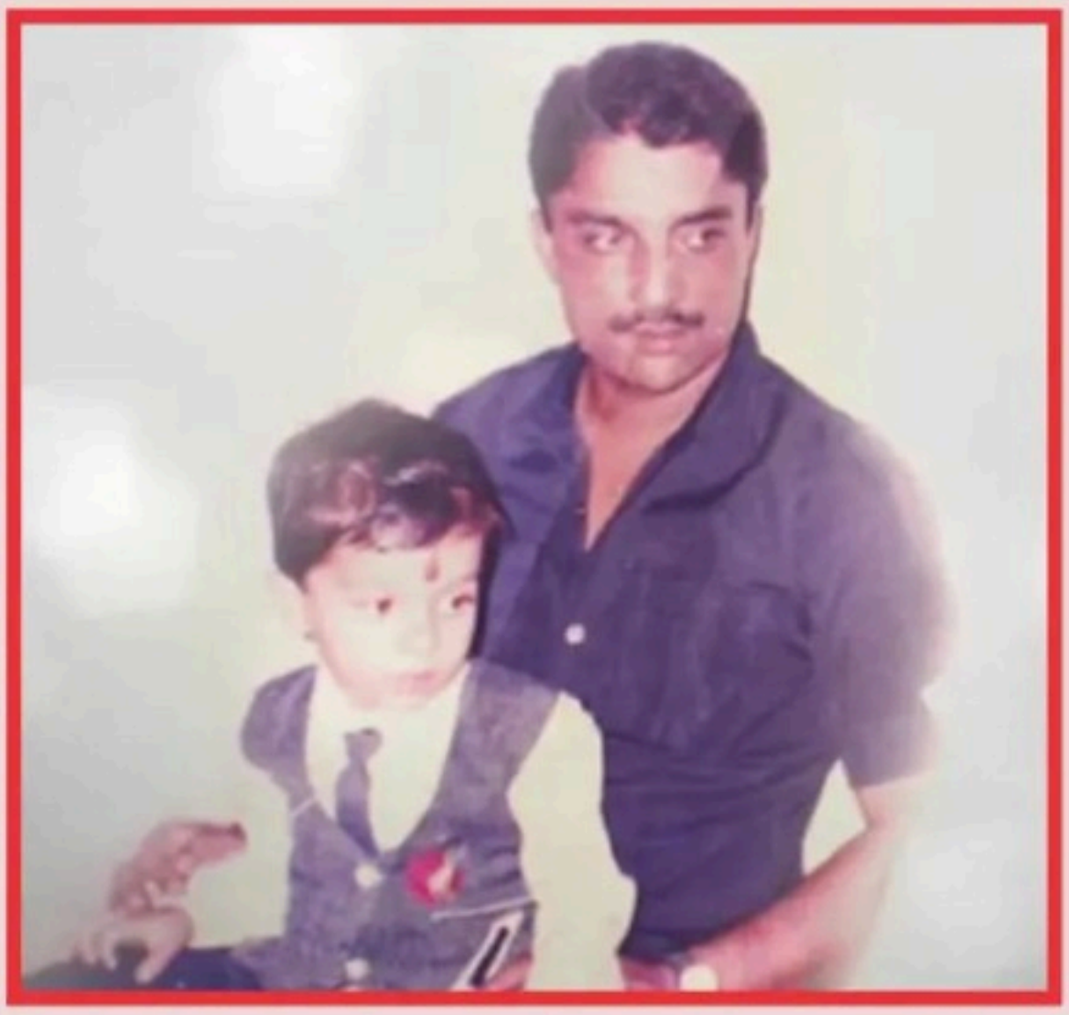

मोटू पतलू और
अनोखा दशहरा

कथानक एवं चित्रांकन –हरविन्द्र मांकड़

यार पतलू, घसीटे ने वादा तो कर दिया है कि मुफ्त में रावण का पुतला बनवा देगा। पर मुझे भरोसा नही हो रहा है।

उसने कहा था कि हमें बस उसके खाने पीने का ध्यान रखना है.. बाकी वो सब संभाल लेगा।

खिला तो मैं उसे समोसे से लेकर पिज्ज़ा तक दूंगा पर वो रावण का पुतला बनवा दे मुफ्त में.. बस

बनवा देगा.. उसे ऐसे कामों का बीस साल का तजुर्बा है

रात होने वाली है घसीटे का तो कुछ अता पता ही नही है?

उसने यहीं मिलने को कहा था। यही लेकर आयेगा रावण का पुतला..

तुम्हें उस पर इतना यकीन कैसे है?

अरे वो भुक्खड़ खाने का लालची है। मुफ्त के खाने के लिए कुछ भी कर सकता है।

लो वो देखों.. आ रहा है अपना यार..

लो भाई रावण के पुतले की एक टांग तो मैं बनवा लाया..

!!

अब लाओ कुछ खिला दो बहुत भूख लगी है..

पर एक टांग का हम क्या करेगे.. हमें तो पूरा रावण चाहिए।

फिर तो घसीटे की खूब आवभगत की गई।

अरे.. सब आयेगा.. मुफ्त में... मेरे दोस्त थोड़ा थोड़ा करके बनायेगें रोज रात को कुछ ना कुछ लाता रहूंगा..

यम.. यम.. बस थोड़ी खीर और ला दो.. यम यम..

लो आज रावण के पुतले की एक बाजू ले आया हूं

मैने भी पिज्ज़ा और गुलाब जामुन तैयार रखे हैं तेरे लिए.

अरे वाह!! आज तो रावण के पुतले का धड़ आ गया।

वाह भई.. वाह.. घसीटा तो वादे का पक्का निकला..

हम तो तुम्हे फालतू का बन्दा समझते थे पर तू तो हीरा निकला..

यार हो तो घसीटे जैसा..

बस अब तो रावण के पुतले का सिर बाकी रह गया।

उसके लिए तुम्हे मेरे साथ चलना होगा।

उसे हमें ध्यान से लाना होगा..

हमें तेरे उन दोस्तों से भी मिलना है जो मुफ्त में हमारे लिए रावण का पुतला बना रहे हैं

कुछ खाना पीना तो उनका भी बनता है..

लगता है मेरे दोस्त घर चले गये पर देखो उनकी इमानदारी, मेरे लिए रावण के पुतले का सिर छोड़ कर गए है।

हां.. ये तो है..

वैसे एक बार मैं उनसे मिलूगां जरूर.. आजकल ऐसे महापुरूष मिलते कहा है

सच में, अगर वो सामने आ जायें तो चरण धो धो के पी जाऊंगा उनके..

अब सिर उठाओ और चलो.. रावण का पुतला खड़ा भी तो करना है।

हमें तुम्ही लोगों का इतजार था। कोई रोज से हमारे रावण के पुतले के अंग तुम्ही चुरा कर ले जा रहे थे ना..

अब तुम्हारे अगों का हम कितना कचूमर बनायेंगे कभी सोचा है।

चोरी..? पर आप लोग तो घसीटे के दोस्त हो ना?

आपने खुद तो उसे रावण के पुतले के हिस्से दिये थे।

आज आपने 'सिर' देना था।

जी नहीं.. हमारे पुतले के हिस्से चोरी हो रहे थे और वो तुम लोग चुरा रहे थे अब भी देख लो.. गुर्रर्र

आह

मार डाला आह

उफ ईइइ

बचाओ..

पुतला बनाने वालों ने उनका मार मार कर कचूमर निकाल दिया और अपने सारे पुतले के हिस्से भी वापिस उठा के ले गए।

बूहूहू.. घसीटे.. तूने मुफ्त का खाना खाने के चक्कर में चोरी की.. कितने बुरे हो तुम..

हायऽऽ मैनें तो तुम्हारा भला ही सोचा था.. बूहूहू

इस बार रावण के पुतले की जगह तुझे ही बांध कर जलायेगें तभी तेरे को अक्ल आयेगी.. गुरर

भाग-1

गहरे पानी में

कथा, शब्द एवम् चित्राँकन : तक्षशिला

इन्सपैक्टर घोरपड़े उस दिन पाटेखाँ के आफ़िस पहुँचे। एक केस के सिलसिले में पाटेखाँ से घोरपड़े की दोस्ती हो गई थी।

हैलो मि॰ पाटे। एण्ड मि॰ काटे।

आइये। आइये। घोरपड़े साहब। चले आइये।

भौं। भौं। वी आए घर हमारे खुदा की कुदरत है। कभी हम उनको कभी अपने घर को देखते हैं।

अबे चकरघिन्नी के, वी आए घर हमारे नहीं, वो आए हमारे आफ़िस खुदा की कुदरत है--

क्यों तू ग़ालिब की आत्मा को कष्ट पहुँचा रहा है?

हा-हा-हा! आपके आफ़िस में आकर सारी थकान दूर हो जाती है! वरना यह पुलिस की नौकरी----

क्यों क्या हुआ पुलिस की नौकरी को घोरपड़े जी

अजी साहब! नौकरी है कि जी का बवाल है! बाप रे! ऐसे अजीब अजीब केस आते हैं कई बार तो-

-कि दिमाग पतंग के माँझे की तरह उलझ जाता है और कहीं कोई सूत्र हाथ में ही नहीं आता

ही-ही-ही! सूत्र हाथ में ~~~ लेना हो या माँझा सुलझाना दोनों ही कामों के लिए आप मुझे याद किया करें!

माँझा सुलझाने की मानी तो मानी जा सकती है घाटे, पर सूत्र ढूँढना तो तुम्हारे बस का रोग नहीं है! यह काम तो मैं ही कर सकता हूँ!

आहा-हा-हा! सूत्र ढूँढने का काम कर सकता है। शरलॉक होम्स अपना भेजा तुझे ही दे गया होगा विरासत में।

ये फुकनूस तो बे-पर की उड़ाता है घोरपड़े जी! आप मुझे बताइये, मैं आपकी क्या मदद कर सकता हूँ? ही-ही-ही-ही।

ठीक है। ठीक है!

वैल जैन्टलमैन! बात यह है कि मनोहरलाल जोशी का कल रात क़त्ल हो गया है!

क्क.. क़त्ल!

मनोहरलाल जोशी? इनकी तारीफ़?

-जितनी भी की जाए कम है! मनोहर लाल जोशी कॉमिक्स की कहानियाँ लिखता था। अच्छा रवासा शरीफ़ आदमी था। उसका कोई दुश्मन हो, समझ नहीं आता।

हाँजी, कामिक्स में कहानियाँ लिखनेवाले का भला कौन दुश्मन हो सकता है?

कोई रीडर, या पब्लीशर!

बन्द कर ले अपनी ये चौंच! अबे कभी अक्ल से भी सोचा कर, हमेशा घुटने से सोचता है - सत्यानासी।

सरासर!

म-- मैंने कुछ --ग़ ग़लत कह दिया है क्या?

ख़ैर! यह मनोहर लाल जोशी रहता कहाँ था?

हाँजी! रहता कहाँ था यह कॉमिक्सका कहानी-कार?

यह रोहतक रोड पर अपनी बहन मनोरमा के साथ रहता था, मगर - उसकी लाश उसकी - सुधा के घर पाई गई है!

जी नहीं! उस बेचारी कांती पता भी नहीं था कि लाश उसके घर में पड़ी है! बाद में पता चला!

ओह! यानी किसी बात पर झगड़ा इतना ब कि सुधा ने मनोहर का क़त्ल कर दिया!

वैसे भी छुरे से क़त्ल करना उस लड़की के बस का काम नहीं है मि० पाटे!

तो हत्या चाकू मार कर की गई है!

आप पूरी कहानी तफ़सील से सुनाइये मि० घोरपड़े!

इन्स्पैक्टर घोरपड़े ने कहानी सुनानी शुरू कर दी!

बात यह है मि॰ पाटे! मनोहर लाल जोशी अपनी बहन मनोरमा के साथ रोहतक रोड पर रहता था! और उसकी दोस्त सुधा हौज़ ख़ास के एक मकान में किराए पर रहती है!

क्या मनोहर और मनोरमा अकेले ही रहते थे?

सुधा के साथ क्या कोई और भी रहता था?

नहीं! सुधा अकेली ही किराए पर रहती है! वह एक एडवर्टाइज़िंग एजेन्सी की परमानैन्ट मॉडल है! उसके माँबाप कानपुर में रहते हैं! और मनोहर व मनोरमा अकेले ही रहते थे।

उनके माता पिता का स्वर्गवास हो चुका है! मनोहर का रोहतक रोड पर अपना घर था! और वह कॉमिक्स की कहानियाँ लिखा करता था!

इतनी सीधी सपाट ज़िन्दगी में हत्यारा कहाँ से आ गया?

यही तो बात समझ नहीं आ रही! एक सीधे सादे शरीफ़ आदमी की हत्या कोई क्यों करेगा भला? ज़मीन जायदाद या पैसों का लूटने का कारण इसके पीछे हो नहीं सकता। और फिर मनोहर की लाश सुधा के घर पाई गई। सुधा से भी किसी की दुश्मनी हो ऐसा नहीं लगता।

हाँ ऐसा हो सकता है घोरपड़े जी। पाटे ने ज़िन्दगी में पहली बार सही सोचा है!

कहीं ऐसा तो नहीं कि सुधा के किसी और प्रेमी ने ईर्ष्या के कारण मनोहर की हत्या करदी हो?

आप दोनों फिर से झगड़ने लगे, मेरी समस्या का भी तो हल सुझाइये!

पहली बार का क्या मतलब है बे चपड़कनाती?

मतलब साफ़ है। आज, अभी तुम्हारे दिमाग़ के फ़्यूज़ बल्ब में आज कुछ झिलमिलाहट सी हुई है वरना तो तुम्हारी अक्ल को बारह महीने जुकाम रहता है!

आपकी समस्या का हल तो मैंने बताया ना, सुधा का कोई और प्रेमी भी मनोहर की हत्या कर सकता है, जलन के कारण!

नहीं मिश्वाटे! ऐसा नहीं है! मैंने अच्छी तरह से तहक़ीक़ात की है! ऐसा नहीं है!

या सुधा ने खुद ही किसी बात पर मनोहर का क़त्ल कर दिया हो! और--

घर से गायब हो गई हो, ताकि लाश की बरामदी के समय वो घर पर न मिले! क्यों?

जी नहीं! मैंने बताया न छुरे से क़त्ल करना उस नज़ुक मिजाज़ लड़की के बस का काम नहीं और फिर क़त्ल के समय वह घर थी ही नहीं!

वह झूठ बोल रही हो सकती है मि० घोरपड़े!

ऐजेन्सी का फोटो-ग्राफर, डाएरैक्टर मेकअप मैन, चौकी-दार व अन्य मॉडल इस बात के गवाह हैं!

ऐजेन्सी में नाईट शिफ़्ट में काम कर रही थी। उस दिन काम की अधिकता के कारण उसे रात को वहाँ रुकना पड़ा था।

जी नहीं। पोस्टमार्टम की रिपोर्ट के मुताबिक़ क़त्ल रात को बारह पाँच से ले कर बारह बीस के बीच हुआ था। और सुधा रात साढ़े नौ बजे से सुबह आठ बजे तक ----

तुमने तो बड़ा ही अच्छा प्वाईंट सामने रखा है मि० पाटे। वाक़ई यह तो लाख रुपये का सवाल है!

और सब से बड़ी बात है कि मनोहर की लाश सुधा के फ्लैट से क्यों बरामद हुई? उसका क़त्ल वहीं किया गया या क़त्ल कहीं और कर के लाश वहाँ पर पहुँचा दी गई?

आह! उस बेचारी पर तो शक करना ही बेकार है! उसके पास तो खून के समय की बड़ी ही मज़बूत शहादत है!

कमाल है! आज पश्चिम से सूरज निकला था क्या? आज तो पाटे रवाँ कमाल पर कमाल कर रहा है! अबे सड़े बेर की गुठली, आज तुझ पर शरलॉक होम्स का भूत आ गया है या तू जेम्सबॉंड की कोई फिल्म देख आया है?

ही-ही-ही-ही! मि० काटे को तो ख़ैर यह आदत है, मज़ाक़ की, मगर आपने तो साहब सचमुच ही कमाल कर दिखाया है!

ही-ही-ही शुक्रिया! शुक्रिया!

अब सवाल यह हैं कि मनोहर की हत्या कहाँ हुई? किसने की? और क्यों की?

और आप की अब तक की इन्क्वारी के क्या नतीज़े हैं इंस्पेक्टर घोरपड़े?

मेरे नतीज़े तो केस को आगे बढ़ाने में कुछ भी मदद नहीं कर पा रहे! सुधा और मनोरमा - दोनों मेरी तफ़्तीश में बेक़सूर साबित होती हैं!

यहाँ तक की सुधा की मकान मालकिन मिसेज़ अरोड़ा भी! और कोई ऐसा व्यक्ति नज़र नहीं आता जिस पर सीधे सीधे शक किया जा सके!

मेरे दिमाग़ के तारों में भी कुछ - झनझनाहट हो रही है इन्सपेक्टर! अगर हत्या सुधा के फ्लैट पर ही हुई है तो बात अलग है! मगर अगर कहीं और हत्या की गई है और लाश को सुधा के घर पहुँचाया गया है तो ज़रूर यह पूर्व निर्धारित योजना के आधार पर हुआ होगा और इसलिए हम---

--यह नतीज़ा निकाल सकते हैं कि हत्यारे को सुधा व मनोहर के सम्बन्धों का पता होगा और वह सुधा को मनोहर की हत्या के संदेह में फँसाना चाहता होगा - नहीं मि० पाटे?

बात तो तुम्हारी ठीक है मि० काटे! मगर ऐसा आदमी कौन हो सकता है? कौन हो सकता है?

शायद कोई एडवर्टाइज़िंग एजेन्सी का आदमी---

शेष भाग अगले सप्ताह

स्वास्थ्य जानकारी

डेंगू

1 डेंगों की बीमारी एक विशेष प्रकार के मादा मच्छर (एडिस एजिप्टी) के काटने से होती है।

2 यह मच्छर दिन में अथवा रात में प्रकाश की उपस्थिति में ही काटते है।

3 यह मच्छर 20 से 100 मीटर तक की दूरी अथवा ऊंचाई तक उड़ सकते है।

4 यह मच्छर रूके हुये ताजे पानी में पनपते है।

5 डेंगू के लक्षण बुखार, सिर दर्द, शरीर में दर्द तथा जोड़ो में दर्द इत्यादि होते है।

6 बच्चों को पूरी आस्तीन के वस्त्र पहनने चाहिए ताकि मच्छरों के काटने से बचाव हो सके।

7 सभी बच्चों को सप्ताह में एक बार यह जांच करनी चाहिए कि उनके घरों में या आस पास कोई ऐसा स्थान तो नहीं है जहां मच्छर पनप रहे हों।

8 रखे हुये पानी को केवल बदल देना काफी नहीं है। उसे रगड़ कर और साफ करने के बाद फेंकना चाहिए।

9 डेंगू बुखार से पीडित बीमार को पर्याप्त मात्रा में पानी पिलाते रहना चाहिए।

10 यदि शरीर में पर्याप्त मात्रा में पानी पहुंचता रहे तो इस से डेंगू बुखार के घातक परिणामों से बचा जा सकता है।

11 सभी बच्चों को रात में मच्छर दानी लगा कर सोना चाहिए।

12 डेंगू बुखार की गम्भीर दशा में ब्लडप्रेशर कम होने लगता है और हृदय की धड़कन की गति बढ़ जाती है।

13 अधिकतर डेंगू बुखार से पीड़ित मरीजों को प्लेटलेट ट्रांसफ्यूजन की आवश्यकता नहीं होती।

बाल कहानी

रावण का पुतला

एक महात्मा से किसी ज्ञानवान मनुष्य ने पूछा–'हर बरस रावण का पुतला क्यां जलाया जाता है ? जबकि वह तो कभी का मर चुका है।'

महात्मा ने कहा–'जिस तरह आम का कोई वृक्ष.. मीठे फलों की जगह जहरीले फल देना शुरू कर देता है, तो बगीचे का मालिक उसके पिछले सारे गुणों को भूलकर. . उससे नफरत करने लगता है।.. और कुल्हाड़ी से इसलिए काट डालता है कि उसकी गहरी जहरीली जड़े कहीं समूचे उपवन को जहरीला न बना दें..'

'लेकिन.. मैं कुछ समझा नही ?' ज्ञानवान मनुष्य ने सवाल किया, इस पर महत्मा ने बताया–'आम की तरह रावण में भी एक लम्बे समय तक गुण भरे थे, लेकिन जैसे ही उसमें बदलाव आया–वह प्रजा के लिए जहरीला राजा बन गया। जहर जहर को काटता है। इसी उद्देश्य से हर बरस रावण का पुतला जलाकर मनुष्यों में फैलती बुराई को दूर करने का यत्न किया जाता है।

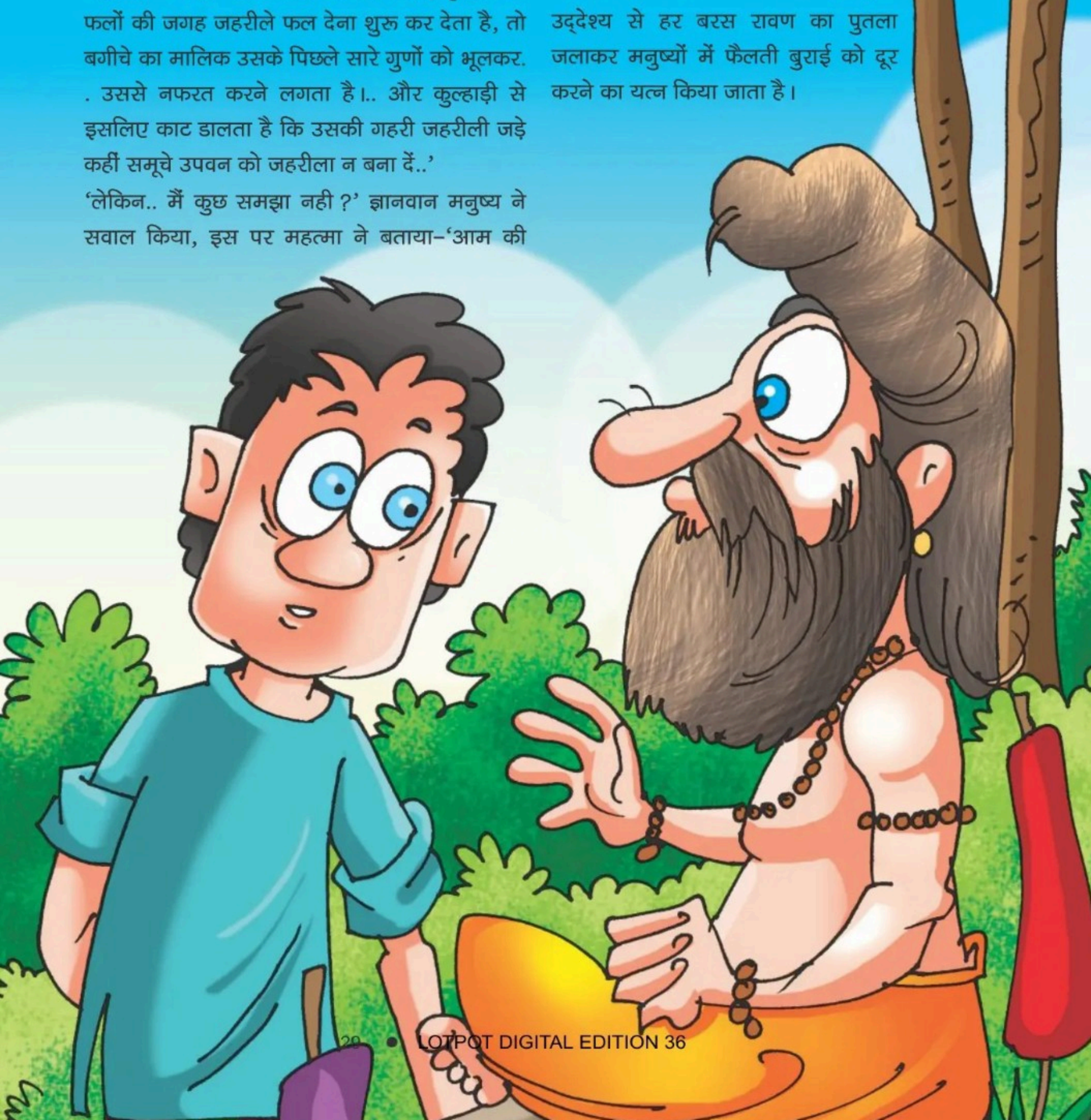

बाल कहानी

डरपोक बकरी को मिला सबक

–सुलेना मजुमदार अरोरा

एक नदी के किनारे एक घना जंगल था जहां कई जानवर रहते थे। एक बार उस नदी में बाढ़ आ गई। पूरा जंगल पानी में डूब गया। सारे पंछी पेड़ की डालियों पर बैठ गए। हाथी, घोड़े जैसे बड़े जानवरों को कोई खास तकलीफ नहीं थी लेकिन जंगल के छोटे जानवरों का बुरा हाल था। आखिर जंगल का राजा शेर ने नदी किनारे जा कर अपने दोस्त मगरमच्छ को आवाज लगाई, ''भाई मगरमच्छ, मेरे प्यारे दोस्त, अगर मेरी आवाज तुम तक पहुँच रही है तो कृपया बाहर आकर मेरी मदद करो।" शेर की आवाज़ सुनकर एक विशालकाय मगरमच्छ पानी से बाहर आ गया। तब शेर ने उससे मदद माँगते हुए कहा कि जंगल में नदी का पानी भर गया है और छोटे जानवरों पर मुसीबत आ गई है। मगरमच्छ कुछ देर सोचता रहा, फिर बोला, ''महाराज, मैं आपकी मदद कर सकता हूँ। नदी के उस पार एक पहाड़ी है, मैं सारे जानवरों को अपनी पीठ पर बैठा कर उस पहाड़ी तक पहुंचा सकता हूँ।" सुनकर शेर बहुत खुश हुआ और जंगल के सारे छोटे जानवरों को नदी किनारे इकट्ठा होकर मगरमच्छ के पीठ पर बैठ जाने को कहा। शेर की बात सुनते ही एक एक करके भेड़, लोमड़ी, सियार बकरी, बिल्ली, खरगोश, सूअर सब उस लंबे चौड़े मगरमच्छ की पीठ पर सवार हो गए। अंत में शेर भी बीच में आ कर बैठ गया। जब मगरमच्छ ने पानी में तैरना शुरू किया तो अचानक बकरी घबराकर चिल्लाने और कूदने फांदने लगी। मगरमच्छ ने उसे शांति से बैठे रहने को कहा लेकिन बकरी मारे डर के इधर उधर उछलती रही जिससे मगरमच्छ का संतुलन बिगड़ने लगा। सारे जानवर परेशान हो गए कि कहीं बकरी के कारण वे सब पानी में गिरकर डूब न जाए। आखिर पास बैठे सियार ने शेर से कहा, ''महाराज, अगर आप आज्ञा दें तो मैं बकरी को एकदम शांत कर सकता हूँ।" शेर ने तुरंत आज्ञा दे दी। सियार धीरे धीरे बकरी के पास आया और उसे धक्का देकर नदी के पानी में गिरा दिया। बकरी पानी में गिरकर छटपटाने और चिल्लाने लगी। उसे तैरना नहीं आता था। वो गहरे पानी में डूबने लगी। तब सियार ने मगरमच्छ से बकरी की पूँछ पकड़ कर उसे वापस पीठ पर चढ़ा लेने की विनती की। मगरमच्छ ने ऐसा ही किया। पीठ पर चढ़ते ही बकरी ने राहत की सांस ली और चुपचाप एक कोने में बैठ गयी। तब शेर ने सियार को शब्बाशी देते हुए पूछा, '' ये बकरी इतनी शांत कैसे बैठ गई?" सियार ने हंसकर कहा, ''महाराज, अब तक उसे ज्ञान नहीं था कि वो कितनी सुरक्षित है, पानी में गिरते ही उसे पता लग गया कि डूबना क्या होता है।"

इस कहानी से हमें ये सीख मिलती है कि बिना सोचे समझे हमें डरना नहीं चाहिए और हर मुसीबत का हल शांति से निकालना चाहिए।

यात्रा

कोटा का भव्य दशहरा मेला

लोटपोट के नन्हें मित्रों, इस बार तुम्हें कोटा के दशहरे मेले की सैर कराते है। कोटा का दशहरा मेला भव्य है और बीस दिन तक मनाया जाता है। भारत में मैसूर और कुल्लू के दशहरे के पश्चात् कोटा का दशहरा गिना जाता है।

भव्य दशहरे का अतीत अत्यंत गौरवमयी है।

सन् 1579 ई, में कोटा राज्य की स्वतंत्रता स्थापना हुई। कोटा रियासत के प्रथम शासक रावमाधों सिंह ने कोटा में वर्तमान किशोर पुरा दरवाजे के बाहर लंकापुरी का निर्माण कराया तथा मिट्टी का रावण बनाकर उसके वध की पूर्वजों की परंपरा जारी रखी। सबसे पहले रावण वध परंपरा का आरंभ 15वी शताब्दी में राव नारायणदास ने मालवे के सुल्तान महमूद पर विजय प्राप्त करने के उपलक्ष्य में किया था। महाराव उम्मेद सिंह द्वितीय ने रावण वध को आकर्षक बनाने के लिए मेले की परंपरा कायम की। यह आज तक नगर परिषद द्वारा भरा जा रहा है।

प्राचीन समाय में रावण, मेघनाथ एवं कुंभकरण के पुतले बनाये जाते थे। रावण के पुतले में 80 मन लकड़ी का प्रयोग किया जाता था। रावण का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उसकी नाक इतनी बड़ी होती थी कि एक बच्चा निकल जाये। तीनों के गलों में लोहे के रस्से बंधे होते थे

रावण दहन के साथ साथ 15 दिनों तक विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम जन जीवन का मनोरंजन करते है। दिन भर और अर्द्ध रात तक भव्य मेला लगता है। नगर परिषद ने पक्की दुकाने भी बना कर अलग अलग वस्तुओं के बाजार बनाये है। विशाल रंगमंच पर तीस हजार दर्शकों की सुविधा है यहां भारत के कोने कोने से आकर लगभग दो हजार दुकाने सजती है।

प्रदर्शनी स्थल मेले का प्रमुख आकर्षण होता है। इस अवसर पर मेले में भारी संख्या में पशु विक्रय हेतु आते है। मनोरंजन के अनेक साधन मेले की अपनी विशेषता है। हर वर्ष मेले को अधिक रोचक, मनोरंजक एवं आकर्षक बनाने का प्रयास किया जाता है। राष्ट्रीय स्तर के मेले को विधिवत रूप से राष्ट्रीय दर्जा देने के प्रयास जारी है।

बाल कहानी

रावण का श्राप

लंका नामक स्वर्ण मंडित नंगरी की पश्चिमी समरभूमि पर घमासान युद्ध चल रहा था। एक ओर रामचन्द्र जी की वानर सेना से डटी थी तो दूसरी ओर लंकाधिपति रावण की भंयकर राक्षसी सेना। दोनों सेनाओं के वीर योद्धा प्राणपण से जूझ रहे थे। आज समर भूमि में एक अनोखा कोलाहल और विचित्र उत्तेजना व्याप्त थी। वानर सेना के समरनायक स्वंय श्रीराम प्रभु थे जबकि राक्षसी सेना का हौंसला लंकाधिपति महाबली रावण स्वंय युद्ध का संचालन कर रहा था। एक क्षण वह भी आया, जब राज ताज त्यागी तपस्वी रूपधारी श्रीराम और राक्षसराज रावण आमने सामने आ डटे। अहंकार के मद में मस्त रावण जोरों से हंसा और बोला-'ओ तपस्वी रूपधारी राम, क्यो बेकार में इन निरीह नासमझ वानरों को लंकाधिपति का कोप भाजन बनाते हो ?.. क्या कोई चींटियों का झुंड प्रबल गजराज के उठते कदमों को रोक सका है ? प्रभु श्रीराम मुस्कराए.. बोले-'रावण, बाचालता छोडकर अपना धनुष धारण करों क्योंकि वीर पुरूष अपना प्रश्न धनुष की टंकार से किया करते है और उत्तर बाणों के प्रहार से दिया करते है' कुपित होकर रावण बोला- 'तो लो, संभालो मेरा प्रहार!'

लंकाधिपति ने क्रुद्ध होकर अपने धनुष पर एक सर्पिला बाण चढ़ाया और कान तक प्रत्यंचा खींचकर उसे श्रीराम पर छोड़ दिया। दिव्य बाण गगन मंडल पर वर्षकालीन बिजली सी गरजी और चमक पैदा करता हुआ श्रीराम पर झपटा। लेकिन ठीक उसी समय रामचन्द्र जी के धनुष से छूटा बाण रावण के बाण से जा टकराया। दिव्य शक्ति बाणों के टकराने से एक प्रलयकारी गर्जना उत्पन्न हुई और पृथ्वी कंपायमान हो उठी। वानर एवं राक्षस क्षणभर को युद्ध करना भूल उस अलौकिक दृश्य को देखने लगे। वह दो महाशक्तियों का महासंग्राम था। एक से बढ़कर एक दिव्य अस्त्र अपनी प्रचण्ड शक्ति का प्रदर्शन करने लगे। युद्ध का वेग बढ़ता ही जा रहा था ऐसा अद्भुत और रोमांचकारी युद्ध पृथ्वी पर पहले कभी नहीं हुआ था। बड़े बड़े वीर सुरमा अपनी सुधबुध भुलाकर उस महासंग्राम का अवलोकन कर रहे थे। स्वर्ग से देवतागण भी इस अभूतपूर्व युद्ध का दर्शन कर रोमांचित हो रहे थे।

युद्ध अविराम अनिर्णीत चलता रहा। एक समय वह भी आया जब श्रीराम स्वंय को थका सा महसूस करने लगे। रावण अब भी अविजित युद्ध कर रहा था। सारे दिव्य अस्त्र शस्त्र उस पर बेअसर सिद्ध हो रहे थे। श्रीराम को ऐसा प्रतीत हुआ मानों रावण की ओट में कई महाशक्ति उनसे युद्ध कर रही है। लक्ष्मण विभीषण, हनुमान तथा सुग्रीव जैसे महावीर भी इस अनिर्णीत युद्ध से विचलित एवं अधीर होने लगे। ऐसे में सहसा एक आकाशवाणी उभरी-हे राम, इस अविजित रावण में स्वंय मां दुर्गा समविष्ट होकर युद्ध कर रही है, अतएव आप रावण पर सिर्फ तभी विजय प्राप्त कर सकते है, जब मां दुर्गे की आराधना कर उन्हें प्रसन्न कर लें।'

आकाशवाणी सुनकर श्रीराम दुर्गा पूजन के लिए तैयार हुए। परन्तु समस्या यह आन पड़ी कि उक्त पूजन कार्य

का संपादन करने हेतु श्रेष्ठ ब्राहमण समर भूमि में आए कहां से? अतः विभीषण ने इस कार्य हेतु रावण का नाम सुझाया। रावण से बढ़कर श्रेष्ठ ब्राहमण भला उस स्वर्ण नगरी में और कौन हो सकता था? मगर प्रश्न यह था कि क्या रावण इस कार्य हेतु तैयार हो जाएगा। किसी को भी इस बात का यकीन न था। परन्तु भगवान राम की पूर्ण आस्था थी कि उन्हे पूजन कार्य हेतु रावण का सहयोग अवश्य प्राप्त होगा। अतः उन्होंने लक्ष्मण को कमल के फूलों सहित रावण के पास भेजा। प्रस्थान करते समय लक्ष्मण ने गुप्त रूप से एक तेज कटार भी साथ ले ली। कि यदि रावण ने पूजन कार्य हेतु रामचन्द्र जी को अपना सहयोग देने से इंकार किया तो वे लक्ष्मण उसी समय कटार द्वारा उसका वध कर देंगे। लक्ष्मण जब कमल पुष्प लिए रावण के समक्ष पहुंचे, तो वह तुरन्त ही सारी बात समझ गया। फिर भी उसने लक्ष्मण जी के विचारों के विपरीत

'दुर्गा पूजन' करवाने के लिए अपनी सहमति दे दी। लक्ष्मण को परम आश्चर्य हुआ उनकी मनोदशा ताड़कर रावण ने कहा–लक्ष्मण, मैं इस वक्त समर भूमि का अविजित योद्धा लंकाधिपति रावण नहीं एक ब्राहमण मात्र हूं.. और एक सच्चा श्रेष्ठ ब्राह्मण कभी भी 'पूजा कार्य' से इंकार नहीं कर सकता.. आप निश्चिंत भाव धारण कर जाइए, मैं नियत समय में 'मां दुर्गे' का पूजन सम्पन्न करा दूंगा।' विस्मित् लक्ष्मण वापस लौटने लगे, तभी सहसा रावण की दृष्टि उस कटार पर पड़ी, जिसे लक्ष्मण ने अपने कमर बंध में छुपा रखा था रावण ने पूछा–'लक्ष्मण, तुम तो एक ब्राहमण के पास निवेदन लेकर आए थे, फिर साथ में यह हथियार क्यों ?' अब लक्ष्मण को सच्चाई बतलानी पड़ी। वे बोले, 'हे रावण, अपने यदि 'पूजा' कराने से इंकार किया होता, तो मैं इस कटार द्वारा आपका वध कर बैठता!' 'लक्ष्मण तुम्हे तो यह कुटिल युद्ध नीति समर भूमि के लंकाधिपति रावण के प्रति अपनानी चाहिए थी.. मगर तुमने एक शस्त्रहीन निर्दोष ब्राहमण की छलपूर्वक हत्या करनी चाही.. अतः मैं तुम्हें श्राप देता हूं. अंतिम समय तुम अपने प्रिय बड़े भाई राम से बिछड़ जाओगे!'

इस तरह श्राप से दुखी लक्ष्मण वापस लौट गए। उन्हें अपने किए पर पश्चाताप भी हो रहा था। उधर, युद्ध भूमि का धूर्त योद्धा रावण ब्राहमण के रूप में अपने कर्त्तव्य पालन से विमुख न हुआ। उसने सही समय पर रामचन्द्र जी का 'दुर्गा पूजन' सम्पन्न करा दिया। पूजन से प्रसन्न हो मां दुर्गे ने श्री रामचन्द्र को युद्ध में विजयी होने का आशीर्वाद दिया और अतः श्रीराम ने लंकाधिपति रावण पर विजय पाई। मगर, ब्राहमण राज रावण का श्राप खाली न गया। अपनी छोटी सी भूल के कारण अंत में लक्ष्मण को अपने प्राणों से प्रिय अग्रज श्रीराम प्रभु से बिछुड़कर उनके अमृतमय स्नेह एवं प्रेम से वंचित होना पड़ा।

बाल कहानी

रावण की प्रयोगशाला

रावण जगत प्रसिद्ध प्रतापी राजा था उसकी लंका स्वर्ण मणियों से सजी थी वह महारथी भी था और ज्ञानी भी। साक्षात शिव इस महापुरूष के शिक्षक थे। रावण ने अपने राज्य में अनकों प्रयोगशालाएं बनवाई। जिसमें प्रायः सभी विषयों की पढ़ाई होती थी, नित्य नये नये प्रयोग और आविष्कार हो रहे थे। एक बार रावण ने एक यज्ञ ठाना। देश के ऋषि मुनियों को भी निमत्रित किया गया।

ऋषिगण आये तो लंका की सम्पन्नता देखकर चकित रह गये। ऋषियों को खुश देख कर रावण भी हर्षित हुआ और अपनी प्रयोगशालाएं दिखाने ले गया। यहां आकर तो मुनि लोग और अधिक आश्चर्य में पड़ गये। लंकेश पुलकित हो कर बोला– देखिये पूज्य ऋषिगण, ये है हमारी विज्ञानशाला और इधर है अस्त्रशाला फिर इधर से थोड़ा हटकर अवस्थित है नृत्यशाला, सैनिकगृह इत्यादि।

वाह! बहुत खूब राजन। मगर ये सब शीघ्र नष्ट हो जायेंगे।

'कैसे'? रावण ने स्तब्ध होकर पूछा। उसे ऋषियों पर क्रोध भी आया पर अतिथि समझकर चुप रह गया। ऋषिगण भी रावण के क्रोध को भांप रहे थे एक ऋषि उसके कंधे पर हाथ रखकर बोले–राजन आपकी प्रयोगशाला निःसंदेह सराहनीय है पर जिस शाला की जरूरत थी उसे आपने नहीं बनवाया है। इसी शाला में स्थायीत्व छुपा है।

वह कौन सी शाला है मुनिवर?

'आचरणशाला'

सद्आचरण से ही स्थायित्व प्राप्त होता है।

राजन, ऋषियों ने एक साथ उत्तर दिया। उनके इस उत्तर से रावण निरूत्तर हो गया।

शेखचिल्ली और जंगल में मंगल

©COPYRIGHT

चल भाई नूरी जिन्न फटाफट जंगल से लकड़ियां काट कर घर लौट चलें, आज मां काफी गुस्से में है समय पर घर नहीं पहुंचे तो खाना नहीं मिलेगा।

मै अभी लकड़ियां काट कर लाता हूं।

दूसरी ओर दो उच्चके झाड़ियों में छिपे हुए थे।

लोटपोट

एक.. दो.. तीन..

आज बच कर कहां जायेगा, एक बार नूरी जिन्न की बोतल मिल जाये फिर हमारे वारे न्यारे हो जाएगें..

चुपचाप नूरी जिन्न की बोतल हमारे हवाले कर दो वरना..

वरना क्या..?

वरना के बच्चे.. नूरी जिन्न हमारा गुलाम बन गया तो हम देश में तहलका मचा देंगे, बोतल हमारे हवाले कर दे वरना जान से मार दूंगा..

वो मारी कुल्हाड़ी काटने में बहुत मजा आ रहा है।

नूरी जिन्न की काटी हुई लकड़ियां काफी दूर तक उछल कर जा रही थी..

काफी लकड़ियां कट गई, अब लकड़ियां इकट्ठी कर लेता हूं..

हाय मै मर...

हाय मेरी मां!! यह एटम बम कहां से आ गिरा मेरे सिर पर?

अरे शेखचिल्ली यह भले जन कौन है?

असल में यह तेरे से मिलने के लिए आये थे, लेकिन मुझे नही लगता कि भले जन अब तुझ से मिलना चाहेंगे।